# APRIL 2018 TO MARCH 2019

# NEWS PAPER COVERAGE 2018-19

कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग का संयुक्त आयोजन

## विश्व मृदा दिवस सह कृषक संगोष्ठी का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग, जिला कबीरधाम के संयुक्त तत्वाधान में विश्व मृदा दिवस सह कृषक संगोष्ठी का आयोजन गत दिनों किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सुरेश चंद्रवंशी, सदस्य प्रबंध मंडल इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर उपस्थित थे। अध्यक्षता डॉ. आरके द्विवेदी अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. केके चौधरी अधिष्ठाता, मात्स्यिकी महाविद्यालय, कवर्धा उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती एवं भगवान बलराम की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों एवं मृदा दिवस की महत्व के संबंध में अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि डॉ केके चौधरी ने उपस्थित कृषकों को संबोधित करते हुए मृदा स्वास्थ्य सुधार हेतु गौ पालन को बढ़ावा देने तथा जैविक खादों के उपयोग को बढ़ावा देने की जरूरत बताई। उन्होंने महती पशुपालन में मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। एनएल पाण्डेय, उप संचालक, कृषि, जिला कबीरधाम ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना एवं विभागीय योजनाओं की विस्तृत जानकारी तथा जैविक खेती की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ आरके द्विवेदी अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, कवर्धा ने मृदा स्वास्थ्य का फसल उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव तथा बेतरतीब उर्वरक एवं कीटनाशक उपयोग का होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। मुख्य अतिथि सुरेश चंद्रवंशी ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि रसायन रहित खेती से ही आने वाली पीढ़ी को उत्तम भोजन उपलब्ध हो पायेगा तथा जिन फसलों में उर्वरक आवश्यकता कम है तथा जिनमें कीट बिमारियों के प्रकोप कम हो उनकी खेती करने की सलाह दी। कोदोंच फसल जिमीकंद की खेती को बढ़ावा देने तथा धरती माँ को विष रहित करने की अपील की। इस अवसर पर 150 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमति राजेश्वरी साहू, विषय वस्तु विशेषज्ञ ने किया। इस अवसर पर लगभग 150 कृषक तथा कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

## कवधा पत्रिका

पत्रिका, कवर्धा, गुरुवार, 6 दिसंबर 2018
patrika.com

किसानों को दी जानकारी

## विश्व मृदा दिवस पर कृषक संगोष्ठी का आयोजन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

कवर्धा. कृषि महाविद्यालय, कवर्धा विशिष्ट अतिथि डॉ. केके चौधरी अधिष्ठाता, मात्स्यिकी महाविद्यालय उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों व मृदा दिवस की महत्व के संबंध में अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि डॉ. केके चौधरी ने उपस्थित कृषकों को संबोधित करते हुए मृदा स्वास्थ्य सुधार के लिए गौ पालन को बढ़ावा देने और जैविक खादों के उपयोग को बढ़ावा देने की जरूरत बताई। उन्होंने माहली पालन में मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। एनएल पाण्डेय उप संचालक, कृषि जिला कबीरधाम ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना व विभागीय योजनाओं की विस्तृत जानकारी और जैविक खेती की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. आरके द्विवेदी ने मृदा स्वास्थ्य का फसल उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव और बेतरतीब उर्वरक व कीटनाशक उपयोग का होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी।



सम्मान... मृदा दिवस पर किसानों का किया गया सम्मान।

### रसायन रहित खेती को बढ़ावा देने पर जोर

मुख्य अतिथि सुरेश चंद्रवंशी ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि रसायन रहित खेती से ही आने वाली पीढ़ी को उत्तम भोजन उपलब्ध हो पाएगा। जिन फसलों में उर्वरक आवश्यकता कम है और जिनमें कीट बीमारियों के प्रकोप कम हो उनकी खेती करने की सलाह दी। कोदोंच फसल जिमीकंद की खेती को बढ़ावा देने और धरती को विष रहित करने की बात कही। इस अवसर पर 150 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया। इस अवसर पर लगभग 150 कृषक और कृषि विभाग व कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

## खरीफ पूर्व कृषि विज्ञान केन्द्र में प्रशिक्षित किए गए कई कृषक

हरिभूमि न्यूज ▶▶कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र में गत दिनो एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया। जिसमें रेड्डी फाउन्डेशन द्वारा चयनित सहसपुर लोहारा ब्लाक के कुल 25 कृषकों ने भाग लिया, जो कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्राप्त तकनीकी ज्ञान को आपके आस-पास गॉवों के अन्य कृषकों को हस्तांतरित करेंगें। प्रशिक्षण की शुरूआत बीएस परिहार, विषय वस्तु विशेषज्ञ ने किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी देते हुए की। प्रशिक्षण के दौरान कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार उर्वरकों का उपयोग करने तथा हरी खाद, कम्पोष्ट, वर्मी कम्पोष्ट आदि जैविक खादों का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाने की सलाह दी गई। कृषको को बताया गया कि स्वस्थ्य व निरोगी बीज बोने से ही फ सल स्वस्थ्य होगी व अधिक उत्पादन प्राप्त होगा। फ सलों में बहुत से रोग बीज से फैलते है। रोग उत्पन्न करने वाले कारक बीज की सतह पर या बीज के अंदर या बीज के साथ मिले रहते है। यह रोगजनक बीज बोने के बाद अपनी अनुकुल परिस्थिति पाकर वृद्धि शुरू कर देते हैं। रोगाणुओं की उग्रता बढने पर अंकुरण से लेकर फ सल की वानस्पतिक एवं बालिया निकलने की अवस्था में रोगों का प्रकोप हो सकता है। जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। धान में झुलसा रोग, भुरा धब्बा रोग, शीथ झुलसा एवं जीवाणु जनित झुलसा आदि प्रमुख रोग आते है। इनके उन्मूलन के लिए बोआई से पूर्व बीज को उपचारित करना आवश्यक है। बीज उपचार करने से बीज के चारो ओर एक कवच सा बन जाता है। जिससे अंकुरण के समय मृदा जनित रोगो से सुरक्षा होती है। बीजोपचार करने से अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है तथा अधिक संख्या में स्वस्थ्य पौधे प्राप्त होते है। जिससे पैदावार में वृद्धि होती है।

# APRIL 2018 TO MARCH 2019

# NEWS PAPER COVERAGE 2018-19

राजनांदगांव • कवर्धा • चौकी • डोंगरगांव • डोंगरगढ़ • खैरागढ़ • पंडरिया

नवभारत

## खरीफ पूर्व कृषक प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

■ नवभारत कार्यालय : कवर्धा.

कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षण कक्ष में एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया जिसमें रेड्डी फाउन्डेशन द्वारा चयनित सहसपुर लोहारा ब्लाक के कुल 25 कृषकों ने भाग लिया, जो कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्राप्त तकनीकी ज्ञान को आस-पास गांवों के अन्य कृषकों को हस्तांतरित करेंगे.

प्रशिक्षण की शुरूआत बी.एस. परिहार, विषय वस्तु विशेषज्ञ ने किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियां जैसे प्रक्षेत्र परीक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, कृषक परीक्षण की विस्तृत जानकारी दी. प्रशिक्षण के दौरान कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार उर्वरकों का उपयोग करने तथा हरीखाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट आदि जैविक खादों का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाने की सलाह दी गई. कृषकों को बताया गया कि स्वस्थ व निरोगी बीज बोने से ही फसल स्वस्थ्य होगी व अधिक उत्पादन प्राप्त होगा. फसलों में बहुत से रोग बीज से फैलते है. रोग उत्पन्न करने वाले कारक बीज की सतह पर या बीज के अंदर या बीज के साथ मिले रहते है. यह रोगजनक बीज बोने के बाद अपनी अनुकुल परिस्थिति पाकर वृद्धि शुरू कर देते है. रोगाणुओं की उग्रता बढ़ने पर अंकुरण से लेकर फसल की वानस्पतिक एवं बालियां निकलने की अवस्था में रोगों का प्रकोप हो सकता है. जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है. धान में झुलसा रोग, भुरा धब्बा रोग, शीथ झुलसा एवं जीवाणु जनित झुलसा प्रमुख रोग आते है. इनके उन्मूलन के लिए बोआई से पूर्व बीज को उपचारित करना आवश्यक है. बीज उपचार करने से बीज के चारों ओर एक कवच सा बन जाता है जिससे अंकुरण के समय मृदा जनित रोगो से सुरक्षा होती है. बीजोपचार करने से अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है तथा अधिक संख्या में स्वस्थ पौधे प्राप्त होते है. जिससे पैदावार में वृद्धि होती है. कृषकों को धान बुआई से पहले यदि स्वयं का बीज उपयोग करते है तो 17 प्रतिशत नमक का घोल बीज को उपचारित करने तथा 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से फफूंदीनाशक जैसे थायरम, बाविस्टिन से बीज उपचार करने की सलाह दी गई.

## सोयाबीन में बढ़ने लगा कीट का प्रकोप

**दिवस**

### सोयाबीन कृषको के लिए दी उपयोगी सलाह

■ नवभारत कार्यालय । कवर्धा.

जिले में खरीफ मौसम में सोयाबीन की खेती प्रमुखता से की जाती है. वर्तमान में सोयाबीन में विभिन्न प्रकार के कीट एवं बीमारियों का प्रकोप देखने को मिल रहा है जिसके कारण कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा लगातार कृषकों समझाईस दी जा रही है. सोयाबीन उत्पाक कृषकों के लिए महत्वपूर्ण कीटों एवं बिमारियों के रोकथाम के उपाय बताया जा रहा है.

कृषकों को समझाईस दी जा रही है कि कीटों एवं रोगों का पहचान कर की उचित दवाओं का ही छिड़काव करें. सोयाबीन में एन्थ्रेकनोज एवं एरियल ब्लाईट बीमारी यदि हो तो टेबुकोनाझोल 625 मि.ली./हे अथवा टेबुकोनाझोल S सल्फर 1 कि.ग्रा./हे को 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें. कुछ क्षेत्रों में चने की इल्ली एवं तम्बाखू की इल्ली का प्रकोप शुरू होने लगा है. इनके नियंत्रण हेतु अलीका (थायोमिथाक्सम S लेम्बडा सायहेलोथ्रीन) 125 मि.ली./हे. की दर से 500 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें जिन स्थानों पर सोयाबीन की फसल पर व्हाइट ग्रब (सफेद सुंडी) का प्रकोप देखने में आ रहा है वहां इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस.एल. 300 मि.ली./हे. अथवा जैविक कीटनाशक ब्यूवेरिया बेसिआना/मेटाराइझियम एनाइसोप्ली 1 किलो/हे. अथवा क्लोरपाइरीफॉस 10 जी 20 किलो/हे. की दर से उपयोग करें.

इस उपाय से तना मक्खी एवं रस चूसने वाले कीट जैसे सफेद मक्खी का भी नियंत्रण होगा. पीला मोजाइक बीमारी को फैलाने वाली सफेद मक्खी के प्रबंधन के लिए खेत में यलो स्टीकी ट्रैप का प्रयोग करें जिससे मक्खी के वयस्क नष्ट किये जा सके. पीला मोजाइक रोग से ग्रसित पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर दें. इससे रोग को फैलने से रोकने में सहायता होगी. जिन क्षेत्रों में अधिक वर्षा हो रही है वहां पर सोयाबीन के खेत में जलभराव ना होने दें.

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा स्वच्छता ही सेवा का संकल्प लेकर स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है. इसके अंतर्गत ग्रामीण कृषको एवं महिला कृषको, स्कूल के विद्यार्थियों, विभिन्न कालेज के विद्यार्थियो मे स्वच्छता के प्रति जागरुकता का संदेश देने के लिए के वैज्ञानिको ने साफ-सफाई का अभियान किया.

## स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का आयोजन

**कार्यक्रम**

■ नवभारत कार्यालय । कवर्धा.

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा स्वच्छता ही सेवा का संकल्प लेकर स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है. इसके अंतर्गत ग्रामीण कृषकों एवं महिला कृषकों, स्कूल के विद्यार्थियों, विभिन्न कालेज के विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश देने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने साफ-सफाई का अभियान किया. जिसमें सार्वजनिक स्थान, घर परिवार, जल स्त्रोतों, स्कूल, कालेज, मंदिर, मण्डी, बाजार, उद्यान से लेकर शहर के समस्त शासकीय एवं अशासकीय स्थानों पर स्वच्छता बनाये रखने का कार्य करा कर स्वच्छता के प्रति अपना योगदान देने कहा.

कृषि विज्ञान केन्द्र के पहल पर



यह कार्यक्रम ग्राम नेवारी में आयोजित किया. कार्यक्रम के दौरान गाजरघास को हटाकर स्वच्छता का संदेश दिया गया एवं प्रक्षेत्र में संचालित इकाई के आस पास स्वच्छता के लिए श्रमदान किया गया. वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बी.पी. त्रिपाठी के मार्गदर्शन में स्वच्छता ही सेवा को ध्यान में रखते हुए गांव नेवारी के स्कूल में साफ-सफाई को प्रेरित करने के लिए रैली निकाला गया एवं स्कूल परिसर की साफ-सफाई की गई. इसी तारतम्य में ग्राम मालिका में कृषकों को स्वच्छता का शपथ दिलाकर उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया.